मराठी साहित्य अकादमी प्राप्त लेखिका सोनाली नवांगुल से सीधी बात

डॉ. वर्षा सहदेव

श्री. विजयसिंह महाविद्यालय, पेठवडगाँव, कोल्हापुर

(भारत, महाराष्ट्र के सांगली जिले के बत्तीस शिराला गाँव की सोनाली नवांगुल को रीड की हड्डी में बड़ी चोट लगी और वह 9 साल की उम्र में बैलगाड़ी से गिरने के बाद लकवा ग्रस्त हो गई। 2000 में, नवांगुल कोल्हापुर शहर में स्थानांतरित हो गई उन्होंने 2007 तक विकलांग एनजीओ के हेल्पर्स ऑफ द हैंडीक्राफ्ट के साथ एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम किया। सोनाली वर्तमान में एक स्वतंत्र स्तंभकार, एक टेड स्पीकर, पुस्तक अनुवादक और लेखिका के रूप में काम कर रही है। सोनाली नवांगुल जी का यह साक्षात्कार हम सभी के लिये मार्गदर्शक एवं प्रेरणादायी सिद्ध होगा।

अनुवाद के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त (2020) लेखिका सोनाली नवांगुल ने अब तक मराठी में 7 किताबें लिखी हैं और उनमें से चार अनुवाद है। 'मध्य रात्रि नंतर चे तास', 'ड्रीम रनर', 'वर्धन रागछे' और 'वर्षा प्रेमाचा' उनकी अनुवाद कृतियाँ हैं। जबकि 'स्वच्छंद', 'जॉयस्टिक', 'एक बच्चों की किताब' और मेधा पाटकर पर एक किताब उनकी अन्य रचनाएँ हैं। नवांगुल ने कहा, "मैंने अपनी शारीरिक अक्षमता को अलग रखा और लिखना शुरू किया। मैंने कई किताबें और उपन्यास लिखे हैं। लेकिन इस उपन्यास का अनुवाद करने के बाद मुझे जो आनंद और जुड़ाव मिला, वह अलग है। अनुवाद को पूरा करने में मुझे लगभग 9 महीने लगे। मुझे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त होने की खुशी है और मैं अपनी शारीरिक अक्षमता को छोड़कर मेरी प्रतिभा की सराहना करने के लिए साहित्य अकादमी समिति का आभार व्यक्त करना चाहती हूँ।")

प्रश्न– सोनाली जी इंसान की जिंदगी में सकारात्मक और नकारात्मक दोनो चीजे होती है; तो आपने अपनी जिंदगी को एक नया मोड़ देने के लिए ऐसी कौन सी बात सकारात्मक ली, जो आपको यहाँ तक ले आई है?

उत्तर: सचिन कुंडलकर नाम का एक मेरा मित्र है, जो फिल्म में डिरेक्टर भी है; उसने कहा था हमारे अंदर नेगेटिव सोच भी होनी चाहिए; इसलिए मैं पॉजिटिव काम ज्यादा कर पाता हूँ। नेगेटिव सोच भी होनी चाहिए हमारे अंदर मुझे ऐसा लगता है कि अंत तक हमें किसी भी टॉपिक को छोड़ना नहीं चाहिए जो काम मुश्किलें नहीं लाए वह भी हमें पूरा करना है। हमारे फैसले पर सब मुमकिन हो सकता है और वह फैसला मैं खुद ले सकती हूँ। तो मुझे नेगेटिविटी यह चीज कुछ खराब नहीं लगती और जरूरी नहीं है कि जिसके बारे में लिखना है उसके बारे में पढ़ा जाए। कई बार ऐसा होता है कुछ अलग पढ़ते–पढ़ते भी कुछ नवीन टॉपिक मिल जाते हैं। या नेगेटिविटी जहरीली नहीं होनी चाहिए मतलब उसने ज्यादा खतरा नहीं होना चाहिए। हाँ लेकिन जिसके साथ नेगेटिविटी भरी हुई है जो इंसान 24 घंटे नेगेटिविटी सोच से जुड़ा हुआ है उससे दूर रहना ही बेहतर है।

प्रश्न– 'ऑस्कर पिस्टोरियस' से पाठकों को कौन सी प्रेरणा मिलती है?

उत्तर : ऑस्कर पिस्टोरियस खेलते वक्त कहता है कि मैं इस खेल में पहले नंबर से जीत जाऊ यह जरूरी नहीं है। जरूरी यह है कि मैंने उस खेल में पहले से बेहतर खेला या उस खेल में क्या पहले से ज्यादा अच्छा खेल खेल सकता हूँ? मेरी हार जीत खुद से है, दूसरों से कम। पर खुद को मिलाने से वक्त सिर्फ बर्बाद होता है। आप सिर्फ खुद को देखो आप अपनी जिंदगी में कल से ज्यादा बेहतर है। कल से आज आपने जिंदगी में चार बातें ज्यादा सीखी हुई है। क्या कल थे उससे बेहतर और भी जिंदगी में हम कुछ अच्छा कर पाए है क्या? सिर्फ यह देखना चाहिए।

प्रश्न– 'मध्यरात्रि नंतर चे तास' इस उपन्यास से लोगों को पॉजिटिव बातें ही दिमाग में लेनी चाहिए या नेगेटिव बातें भी लेनी चाहिए आपको क्या लगता है?

उत्तर : इस उपन्यास को पढ़कर मनुष्य के दिमाग ने जो सोचा वह सब जिंदगी के अंदर लेना चाहिए । बुरे वक्त पर ही इंसान बाहर निकलता है मुश्किलों से इंसान सही रास्ते पर भी आ सकता है । जैसे कि, सलमा । इस उपन्यास में एक फिरदोस नाम की लड़की है । वैसे तो आदमी तलाक देता है, औरत तलाक नहीं दे सकती । सलमा को उसका अपना पति बिल्कुल पसंद नहीं आता, तो वह उस वक्त ही वहाँ से निकल कर घर वापस आ जाती है । उनके छोटे से गाँव में यह बहुत बड़ी बात थी । ऐसे कैसे लड़की तलाक देकर घर वापस आ सकती है? तलाक देने का हक सिर्फ लड़कों को है ना? और ऐसी औरत तलाक देकर गाँव वापस आती है । अपने घर में रहती है और वह लड़की अपने पड़ोस के एक हिंदू के लड़के से प्यार करती है । एक हिंदू लड़के से प्यार करें यह बात किसी को पसंद आने वाली नहीं है । लेकिन तलाकशुदा लड़की ने हिम्मत की । मुझे ऐसा लगता है कि ऐसी छोटी–छोटी बातों से भी किसी को कुछ मिल सकता है । किसी को किस चीज में से क्या मिलता है यह हम अंदाजा नहीं लगा सकते । हर एक इंसान अलग–अलग होता है, सभी जज्बातों से जुड़े हुए होते हैं । इसलिए हम बता नहीं तथा यह अंदाजा नहीं लगा सकते किसी को क्या पसंद आएगा?

प्रश्न– उजाला देखने के लिए अंधेरे से भी गुजरना पड़ता है इसके बारे में आप क्या कहेंगी?

उत्तर : हाँ बिल्कुल सही है! एवरी क्लाउड इस ए सिल्वर लाइनिंग । बारिश फिल्म है, उस सिनेमा में एक लाइन यह थी कि जिस जगह पर जख्म होता है ना उस जगह से उजाला अलग तरीके से दिखता है क्योंकि जख्म के बीच–बीच में जो उजाला होता है उसी से कुछ अलग उजाला ऊपर आता है और वह उजाला अच्छा है या बुरा यह खुद को जानना पड़ता है, समझना पड़ता है और इंसान के पास हमेशा के लिए अच्छा बनाने की आदत होनी चाहिए ।

प्रश्न– अपनी जिंदगी में एक रोल मॉडल होना चाहिए या नहीं आपको क्या लगता है?

उत्तर : क्या कह सकते हैं आप इस बात पर ऐसा कुछ भी नहीं है यह सब एक पुस्तक की बात है। लेकिन हाँ! कहने की बात हो तो एक रोल मॉडल होना चाहिए। क्योंकि जिंदगी में रोल मॉडल है तो किसी तरह से अच्छा भी नहीं हो रहा तो भी कोई फर्क नही पडेगा । मेरे लिए वह इंसान रोल मॉडेल है, जो सभी के लिये आदर्श है; उनका नाम है राष्ट्रपति अब्दुल कलाम । लेकिन हेयर स्टाइल के मामले में वे मेरे लिए आदर्श नहीं हो सकते; मुझे माधुरी दीक्षित की हेयर स्टाइल पसंद आ जाएगी । भाषा की बात हो तो मुझे बाद में नसरुद्दीन शाह पसंद आ जाए । स्मिता पाटिल भी मुझे कुछ हद तक पसंद आ जाए। इसलिये कोई एक रोल मॉडेल मेरे लिये नही ।

प्रश्न– इंसान की पसंद ना पसंद हमेशा के लिए एक नहीं रह सकती आप इस बारे में क्या कहना चाहेंगी?

उत्तर : कुछ बातें होती है कुछ जिंदगी के तत्व भी होते हैं जो कभी बदल नहीं सकते । वे तत्व बदलने की नौबत ही नहीं आनी चाहिए । आज्ञाकारी लोगों के बारे में अपने अंदर उनके लिए इज्जत होनी चाहिए, सम्मान होना चाहिए । सच बोलना यह भी बात बदलना बिल्कुल भी नहीं चाहिए । बस कुछ बातें हैं जो बदलनी नहीं चाहिए; लेकिन सच बात किस तरह से इसके सामने बोलना चाहिए इस बारे में अपना खुद का अनुभव उसकी भाषा यह सब बातें धीरे–धीरे अच्छी होती जानी चाहिए ।

प्रश्न– उपन्यास का अनुवाद करते समय आपके सामने कौन सी चुनौतियाँ आई थी?

उत्तर: चुनौतियाँ मतलब वह उपन्यास मूल तमिल भाषा में लिखित है । तमिल से अंग्रेजी में अनुवादित हुआ तो उसको लिखने के लिए मैंने अंग्रेजी भाषा से उसको मराठी में अनुदित की है । इसमें बहुत सी बाते थी। जैसे– कजन माने फूफी का लड़का है या मामू का लड़का है या वह कौन है? यह समझना एक समस्या थी । उसमें नाम भी ऐसे थे कि जल्दी से समझ ही नहीं आते थे; मुस्लिम

फैमिली थी और उसमें ज्यादातर मुस्लिम लोग ही रहने वाले थे । एक छोटा सा गाँव था; लेकिन वहाँ का माहौल कुछ अजीब सा था । तब मुझे तमिल के रीति–रिवाज पता नहीं थे । आज मुझे रसोई की कहानियों से अलग–अलग तरह के व्यंजन के विषय में पता है । तब मुझे इसमें मुझे थोड़ी तकलीफ हुई । मैंने एक बात भी नोटिस की कि मुस्लिम धर्म में अजान देते हैं मेरे फ्रेंड्स भी मुस्लिम धर्म के हैं लेकिन मुझे उनके धर्म के बारे में कुछ पता ही नहीं है । इस बात से मुझे अच्छा महसूस नहीं हुआ, मुझे खुद पर शर्म आ रही थी कि हम जिनके साथ हमेशा उठते–बैठते हैं जिनके साथ अधिकांशतः रहते हैं, उनके बारे पता उनके मजहब के बारे में हमें कुछ भी नहीं पता । क्या हमें कुछ जानने की जरूरत ही नहीं है? तब मैंने तय कर लिया कि मैं भी उनके धर्म के बारे में जानूँगी, मुझे भी सब पता होना चाहिए । इस बार ईद पर जो खीर बनाई थी वह मैंने अपने मुस्लीम दोस्त से सीख थी और उससे भी कहा था की मैंने तुमसे खीर बनानी सीखी है तुम भी हमारे यहाँ गणेश चतुर्थी पर बनने वाले मोदक सीख सकते हो, आज उसे हमसे अच्छे मोदक बनाने आते हैं । इसको एक–दूसरे के मजहब के प्रति अभिव्यक्त आदर, इज्जत या सम्मान कहा जा सकता है । हमारे दिल में एक–दूसरे की इज्जत होनी चाहिए, बस ऐसी चुनौतियाँ मुझे इस उपन्यास को लिखते समय आई थी ।

प्रश्न– सोनाली जी आप इस अवस्था में है तो आपके रिकवर होने में कौन आपके लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ?

उत्तर : सच में ऐसी कोई प्रेरणा नहीं होती यह मुझे जीवन जीते समय समझ आया । अपने को आसान लगता है 4 बड़े बड़े नाम लेकर उन्हें प्रेरणादायक बना देना । मैं तो खुद को भी प्रेरणादायक नही मानती । मुझे लोग बोलते हैं कि आप हमारी प्रेरणा है तब भी मैं इन्कार कर देती हूँ । मैंने इस पर भाषण दिया था । जब भी मैं लोगों की प्रेरणा बनी; तभी मैने नकार दिया । लोग तुम्हारी एक विशिष्ट प्रतिमा बनाएँगे और उसमें आपको बिठाएँगे और आपको ईश्वर मानेंगे या फिर मसीहा समझेंगे इन सब से बाहर निकलेंगे तो ही आपको गलत होने का मौका मिलता है । उससे आप अपनी अंदर की गलतियाँ सुधार सकते हैं । हम इंसान हैं अतः कभी न कभी गलत भी होंगे। कभी रोएँगे, कभी नाराज होंगे, कभी–कभी सीख जाएँगे, गलत बर्ताव करेंगे तो किसी पर अन्याय भी करेंगे यह सभी अपना जीवन होता है । मैंने हर बार ऐसा ही सोचा है कि मेरी कोई प्रेरणा नहीं; मुझे सभी चीजों से प्रेरित होना अच्छा लगता है और मुझे न जिंदगी जीने में बहुत अच्छा लगता है । क्योंकि जिंदगी जीने में बहुत सारे ऑप्शन्स है । मैं अपने पैर खो चुकी इसका मुझे आत्मज्ञान है या नहीं यह मैं बता नहीं पाऊंगी । आपके पास कोई चीज न हो तो फिर आपको उसकी कीमत पता चलती है । जब मेरी पहली बार पहली पावर कुर्सियाँ आई तो मेरी सहकारी मंदा और मैं बहुत खुश हुई । हम पहली बार शॉपिंग के लिए महाद्वार रोड पर गए तो लोग सिर्फ हमारी तरफ देख रहे थे और उन्होंने मेरी प्रशंसा की थी और हमने सब्जी भी खरीदी तो सब्जी वाले ने भी हमें सिखाया सब्जी कैसे ली जाती है और इंसानों की लेन–देन भी हमें इंस्पायर करती है । ऐसी अलग–अलग घटनाओं से प्रेरणा मिलती है । चाहे वह अच्छी हो या बुरी और फूलों में भी इंस्पायर करने की ताकत होती है ऐसा मुझे लगता है ।

प्रश्न– आप लिखकर यहाँ तक पहुँचेगी यह भरोसा आपको था क्या?

उत्तर : नहीं! जब आप काम करते हो तो पूरी तरह से ठीक तरीके से करना चाहिए । उस काम का मजा लेते हुए काम करना चाहिए और इससे आपको खुशी मिलती है और हम नहीं डिसाइड करते कि मेरे इस काम में सफलता प्राप्त होगी या नहीं । यह एक झूला है जो कभी–कभार ऊपर जाता है तो कभी–कभी नीचे आता है । ऐसे ही अपने कार्य में आनंद लेना चाहिए। हार–जीत तो होती रहती है बस यही जीवन है.....

प्रश्न– खुद का घर लेकर अकेले रहना आसान बात नहीं है, यह आपने कैसे किया?

उत्तर : पहले तो हम बच्चों को अपने माता–पिता ने हम पर यह विश्वास दिलाया कि हाँ, हम यह कर सकते हैं । मैं भी अपनी जिंदगी में अकेली जी सकती हूँ । मेरे माता–पिता और मैं पहले गाँव में रहते थे; तो गाँव के लोगों को समझाना थोड़ा मुश्किल होता है । पर मैंने अपने माता–पिता को यह भरोसा दिलाया कि मैं भी अपनी जिंदगी अकेली जी सकती हूँ । मैं 2007 में शिवाजी

पेट में रहने गई । सब कुछ करके देखना पड़ता था । जिंदगी है तो हमें हर तरह का संघर्ष करना पड़ता है । वहाँ पर एक प्रश्न है तो उसके उत्तर हमारे पास होने चाहिए । मुझे 10 साल हो गए घर में काम करना, रसोई में खाना पकाना इन सब बातों का अंदाज लेकर भी खुशी से रह रही हूँ ।

प्रश्न– अपने समाज में खुद को कैसे सवारे?

उत्तर: समाज वालों का क्या है जिसकी जैसी सोच। समाज में रहना है तो कभी–कभार लोगों से मीठी बातें करनी चाहिए अगर अच्छाई से ना माने तो हमें उन्हें छोड़ देना चाहिए । मेरे ऑफिस वाले नहीं पूछते कि आपके घर का काम कौन करता है? आपका खाना कौन बनाता है? यह समाज वालों के अलग–अलग प्रश्न होते हैं । समाज में ऐसे भी लोग होते हैं कि वे सोचते हैं कि हम अपना जीवन आसानी से नहीं जी सकते हैं; लेकिन मैं समाज वालों को इसका जवाब दे चुकी हूँ । मैं सब कुछ अकेली कर सकती हूँ; इस तरह मैंने स्वयं को समाज में संवारा है ।

प्रश्न– सोनाली जी आपके लिखने की शुरुआत कब से हुई?

उत्तर : लिखने की आदत तो सभी को छात्र दशा से ही लगती है । गृहपाठ पूरा करते समय, अपना अभ्यास करते समय लिखना हुआ। हमारे तहसील में मेरे पिताजी की संस्था है । हमारी एजुकेशन सोसाइटी में एक कन्या पाठशाला थी । पर मेरे पिताजी माध्यमिक शिक्षक थे । गाँव में जो पाठशाला होती है वैसे शहरों में नहीं होती । यानी कि शहरों में सब कुछ अच्छा होता है; वैसे अपने गाँव की पाठशाला में नहीं होता । मुझे खुद को एक महीने तक यह अनुभव था की कपड़े गीले होने के बाद कई लड़कियाँ मुझे चिढ़ाने लगी और मेरी खुद की इतनी तैयारी भी नहीं थी । मेरे माता–पिता को यह बात पता नहीं थी ।

अब आयुक्तालय, मंत्रालय और कहीं–कहीं पाँच सरकारी लेवेल तक जो पत्र व्यवहार चलता है तो वह मैं अच्छी तरह से लिख देती हूँ । मैंने इंग्लिश सब्जेक्ट में ग्रेजुएशन किया है । 7 साल मैंने सोशल वर्क का काम किया हुआ है । बाद में मैंने 2007 को स्वतंत्र रहने का फैसला किया । वह मेरी अंधेरे में छलांग थी । वास्तविक रूप में मैंने 2008 से लिखना प्रारम्भ किया । मैं अरुणा धोने की किताबें पढ़ती हूँ इसलिए मुझे लिखना ही पॉसिबल है ऐसे लगा ।

प्रश्न– 'मध्य रात्रि नंतर चे तास' यह उपन्यास स्त्री प्रधान उपन्यास है?

उत्तर : यह उपन्यास औरतों का ही उपन्यास है ऐसा नहीं। उसमें औरत एक मध्यवर्ती भूमिका में दिखाई देती है । इस उपन्यास में 30–40 अलग–अलग महिलाएँ हैं; 15–20 अलग–अलग पुरुष है । यह उपन्यास कभी राबिया का होता है, तो कभी जोहरा का होता है और कभी–कभी किसी और का होता है पर वह महिलाओं का ही उपन्यास है ऐसे नहीं । उसमें पुरुष भी है । इस तरह एक–दूसरे के सहयोग से दुनिया चलती है ।

प्रश्न– आप ने अब तक जो किताबें लिखी है उनमें से आपकी पसंदीदा किताब कौन सी है?

उत्तर : यह कहना तो बहुत मुश्किल है मेरे बारे में क्योंकि मुझे कौन सी किताब पसंद है, मुझे तो हर किताब में सब कुछ अलग–अलग तरह से पसंद है । दूसरी बात ऐसी है कि हर बार मुझे लगता है कि पूरानी चीजों को एक–एक करके चार्ज कर पीछे छोड़ना चाहिए; क्योंकि उनमें कुछ तो खुद की गलतियाँ दिखाई देती है । खुद को लगता है कि इसमें खुद ज्यादा अच्छा करना आया होता तो और आपकी जो पूराने काम देखें उससे खुद को कॉन्फिडेंस भी आता है । वैसे भी आप खुद कितनी बार गलतियाँ करते हैं वह आपको पता होता है पर उस गलती पर उसके आगे का काम और ज्यादा अच्छा होता है इसलिए यह नहीं कहा जा सकता है कि कौन सी किताब अच्छी है, सभी किताबें अच्छी लगती है मेरी मुझे...

प्रश्न– समाज से आपको कैसे अनुभव मिले मतलब अच्छे बुरे इसके बारे में आप क्या कहेंगे?

उत्तर : मुझे बुरे अनुभव तो वैसे भी बहुत है जब मैं मार्केट में जाती हूँ तो उसी जगह की महिलाएँ, अपने बच्चों को बोलकर उनको गाली देने लगती थी कि देखो कितनी छोटी औरत चल रही है, और वह भी देखो चेयर पर बैठी हुई, उस औरत को भी देखो कैसी है? यह बोलकर हँसना चिढ़ाना आदि । इसे बहुत कुछ अनुभव ही कहेंगे । मुझे किसी के द्वारा कैसी हो तुम? यह सवाल पूछना अच्छा नहीं लगता । क्योंकि मैं बीमार नहीं हूँ ।

प्रश्न– सोनाली जी आपके जीवन में कौन से लेखकों ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर : हमारी जिंदगी में प्रभावित करने वाले लोग बदलते रहते हैं; मुझे गौरी देशपांडे जी अच्छी लगती है । और मेघना पेठे, लक्ष्मी बाई आदि अच्छे लगते हैं । सरिता अलवर उनकी माँ की पुस्तक अच्छी लगती है । जागतिक सिनेमा देखने के लिए मेरे मित्र कहते हैं । अभिजीत, मंदा इस पर चर्चा करते हैं; इन फिल्मों को देखकर ऐश्वर्या खेड़कर उन्होंने विजापुर डायरी का अनुवाद किया है । जों डायरी नक्सलवादी पर है । जो मुझे पढ़कर अच्छी लगी । कविता महाजन की शिक्षाएँ अच्छी लगती है । सुरेश भट, अरुण कोलटकर, दिलीप चित्रे इन को भी पढ़ना चाहिए । अनुराधा पाटील, कविता महाजन आदि है आप एक कक्षा में नहीं रह सकते आगे की कक्षा में जाना पड़ता है ।

प्रश्न– आज की युवा पीढ़ी के बारे में आपके क्या विचार हैं?

उत्तर : हर पीढ़ी के इंसान अच्छे ही है; आज की पीढ़ी साहसी, तकनीकी है । जल्द से कोई भी बात कर लेती है । आज की पीढ़ी शोध कार्य में भी आगे है। यह दुनिया को मोहित करने वाली है। साहस से बोलने वाली और झटपट अनुकरण कर लेती है, ऐसी आज की पीढ़ी है । सोनाली जी आपने अपना कीमती समय हमे दिया, इसलिए आपके तह दिल से आभार! धन्यवाद!!!

-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-X-